Notes

Mon Tue Wed Thu Fri Sat Sun

5- समूह-कारक सिद्धान्त-

बुद्धि के द्वि-कारक सिद्धान्त तथा बहुकारक सिद्धान्त बुद्धि के सम्बन्ध में त्रुटिपूर्ण या विपरीत विचार प्रस्तुत करते हैं। इस कमी को दूर करने के लिए थर्सटन ने बुद्धि का समूह-कारक सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। इस सिद्धान्त के अनुसार बुद्धि न तो सामान्य कारण से निर्धारित होती न ही असंख्य सूक्ष्म व विशिष्ट तत्वों से मिलकर बनी है वरन कुछ प्राथमिक कारणों से मिलकर बनी होती है। थर्सटन तथा उसके सहयोगियों ने कारण विश्लेषण नामक सांख्यिकीय प्रविधि का प्रयोग करके इन प्राथमिक कारकों का पता लगाया था जिन्हें इन्होंने प्राथमिक मानसिक योग्यताओं के नाम से सम्बोधित किया। बुद्धि के ये इन प्राथमिक कारक क्रमशः 1-आंकिक कारक - N, 2-शाब्दिक कारक - V, 3-स्थानिक कारक - S, 4-प्रत्यक्षपटुता कारक - W, तार्किक कारक - R, तथा स्मृति कारक - M हैं।

प्रत्येक जटिल मानसिक कार्य में इन कारणों की कुछ न कुछ आवश्यकता पड़ती है परन्तु किसी मानसिक कार्य को करने में इनमें से कुछ कारकों का अधिक उपयोग होता है जबकि किसी अन्य मानसिक कार्य को करने में किसी दूसरे कारकों का अधिक उपयोग हो सकता है। इस चित्र के द्वारा निम्न प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है।

Anoop

Notes

Mon Tue Wed Thu Fri Sat Sun

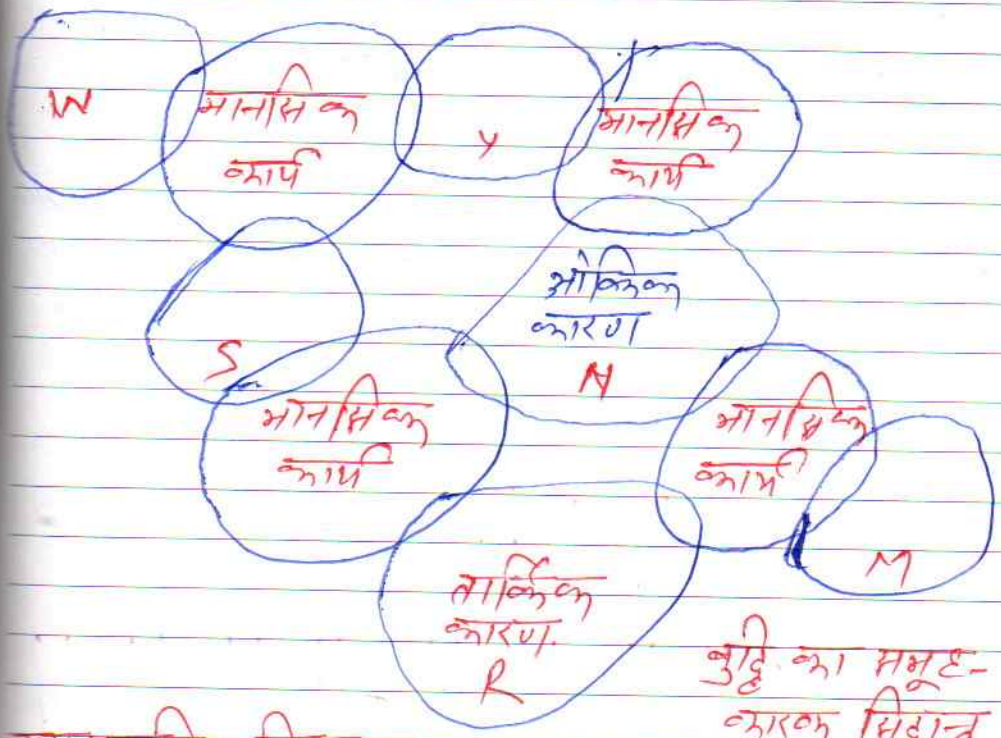

बुद्धि का समूह-कारक सिद्धान्त

-पदानुक्रमिक सिद्धान्त -

बुद्धि के दो कारक, बहु-कारक तथा समूह-कारक सिद्धान्तों में समन्वय करते हुए फिलिप वर्नन ने मानवीय योग्यताओं का पदानुक्रमिक संरचना प्रस्तुत की और कहा कि मानवीय योग्यताएँ एक क्रमिक रूप में व्यवस्थित होती हैं जो क्रमशः सामान्य कारक, मुख्य समूह कारक, लघु समूह कारक, तथा विशिष्ट कारक होते हैं।

सामान्य कारक बुद्धि का सर्वाधिक व्यापक कारण है। यह सभी प्रकार के मानसिक कार्यों में सहायक होता है।

Anoop

सामान्य को दो भागो में विभक्त किया जा सकता है।
A- शाब्दिक व शैक्षिक योग्यताएं V:ed
B- गतिक व यांत्रिक योग्यताएं K:M

इन दो कारको को लघु कारको में बांटा जाता है जैसे- शाब्दिक, आंकिक, यांत्रिक सूचना, प्रायोगात्मक स्थानिक। लघु समूह कारको को विशिष्ट मानसिक कार्यो से सम्बन्धित अनेक विशिष्ट कारको के रूप में विभक्त किया जाता है।

बुद्धि का पदानुक्रमिक सिद्धान्त

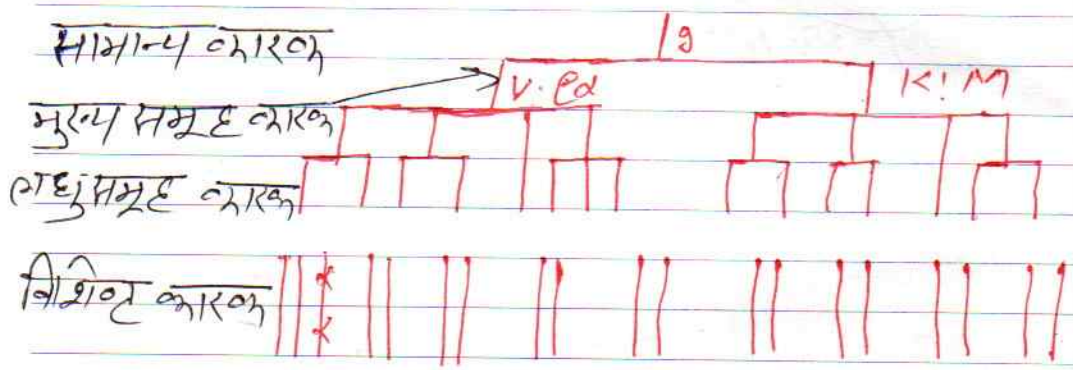

7- बहु-बुद्धि सिद्धान्त - Multiple Intelligenece Theory

इस सिद्धान्त का प्रतिपादन हावर्ड गार्डनर ने 1983 में किया था गार्डनर ने कहा कि बुद्धि का स्वरूप एकाकी न होकर बहु-प्रकारीय होता है। गार्डनर ने सात प्रकार की बुद्धि को बताया है। ये सभी एक दूसरे से स्वतन्त्र होती है तथा प्रत्येक के क्रियाशील होने का ढंग अलग-अलग होता है।

Anoop

Notes

Mon Tue Wed Thu Fri Sat Sun

गार्डनर के अनुसार बुद्धि के सात प्रकार निम्न हैं।
A - भाषायी बुद्धि
B - तार्किक - गणितीय बुद्धि
C - स्थानिक बुद्धि
D - शरीर - गति की बुद्धि
E - संगीत बुद्धि
F - वैयक्तिक आत्म बुद्धि
G - वैयक्तिक - पर बुद्धि

→ भाषीय बुद्धि से तात्पर्य शब्दों व वाक्यों की बोध क्षमता से है।

→ तार्किक - गणितीय बुद्धि से अभिप्राय तर्क करने की क्षमता व अंको के बोध आदि में है।

→ स्थानिक बुद्धि से तात्पर्य स्थानिक चित्रण व कल्पनाशक्ति से है।

→ शारीरिक - गतिक बुद्धि से तात्पर्य शारीरिक गति पर नियंत्रण करने व इसमें प्रवीणता लाने की क्षमता से है।

→ संगीत बुद्धि में तारत्व व लय को समझने तथा संगीत सामर्थ्यता व निपुणता निहित रहती है।

→ वैयक्तिक आत्म बुद्धि में अपने भावों व संवेगों को नियमित करने, विभेद करने तथा स्वयं के व्यवहार को निर्देशित करने की क्षमता समाहित रहती है।

→ वैयक्तिक पर बुद्धि से तात्पर्य अन्य व्यक्तियों की इच्छा, अपेक्षा आदि

गार्डनर के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में इन सातों तरह की बुद्धि होती है। परन्तु वंशानुक्रम तथा वातावरण के के अभाव के

Anoop

Notes

Mon Tue Wed Thu Fri Sat Sun

कारण एक या अनेक प्रकार की बुद्धि अधिक विकसित हो सकती है गार्डनर का यह सिद्धान्त बताता है कि ये सभी सातो प्रकार की बुद्धि यद्यपि परस्पर अन्तर्क्रिया करती है फिर भी स्वतन्त्र रूप से कार्य करती है यही कारण है कि एक व्यक्ति किसी एक क्षेत्र में पूरक होने के बावजूद अन्य क्षेत्र में असफल हो सकता है

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Anoop